



3101 11/11/10
618
ASHA ARCHIVES

ॐ नमः श्रीचक्रसम्बराय ॥ ॥ श्रीचक्रसम्बराय नमः
 नमस्कार ॥ ॐ आः ह्रीं श्रीमद्वज्रसत्त्वगुरुवरचरणाकमला
 यः सम्पद् ज्ञानावभासनकराय नमो ह्रीं नमो ह्रीं नमो नमः भ
 क्ताहं त्वं नमस्यामि गुरोनाथ प्रसीद मे ॥ ॥ श्रीशोभा संयुक्ता
 जुया विज्याकलः श्रीवज्रसत्त्व उत्तमगुरु भिं गुज्ञान प्रकाश
 याना विज्याकलः चरणाकमले जिनं नमस्कार हेनाथ हेगुरु
 भक्ति भावनं जिनं छल पोलयात नमस्कारयाना जिउउप
 रे छल पोल प्रसन्न जुया विज्याय मात ॥ ॥ वन्दे भवाब्धि
 संमयं संतारिणी यतीशयं ॥ सङ्गुरु यत्प्रसादेन ममायं ज्ञान
 संभव ॥ श्रीमते वज्रडाकाय डाकिनी चक्रवर्तिनी ॥ पंचज्ञानं त्रि
 कायाम त्राणाय जगते नमः ॥ यावन्तो वज्रडाकिन्यः छिन्नसंक
 ल्पवधनाः ॥ लोकाकल्प प्रवर्तिन्य स्तावती भो नमः सदा ॥ ५ ॥
 संसाररूपी सङ्ग्रेडनाच्छिपित धक्यारक्षायाना विज्याकल
 यतीश्वर सङ्गुरुयात जिनं नमस्कार गुल्लछल पोलया प्रसाद
 जित ॐ जो गुज्ञान उत्पत्तियाना विज्याकल श्रीमान् वज्रडाक
 नपागत डाकिनी चक्रे विज्याकल न्या गुज्ञान स्वरूप जुया
 स्वगुहारीरधरेयाना जगत्संसारयात रक्षायाना विज्याक
 ल छल पोलयात जिनं नमस्कार ॥ अलितक वज्रडाकिनी ग
 रापि संकल्परूपी वधनागारं छुतेयाना विज्याकपि लोक

गरापिनी यायमायकार्यं प्रवर्तनायाना विज्याकपिं उधपिं
 सकलयातजिनं नमस्कार॥ ५॥ ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्मा
 र्णां स्वभावशुद्धोहं शून्यता ज्ञानवज्रस्वभावात्मकोऽहं ॥ ५॥
 ॐ आः हूं ऋटित्वाकारेण शून्यतां भावयेत् ॥ श्रीकारमद्वयज्ञा
 नं हेकारहेतुवर्जितं ॥ रूकाररूपनासार्थं ककारे न कचिच्छि
 तं ॥ ॐ सर्वसत्त्वोद्धरणहेतोः शुक्लवर्णादिभुजसम्बरमात्मानं भा
 वयेत् ॥ ५॥ ॥ पलरत्नं शून्यता भावयेत् श्रीकारध्याय नि
 गुमउगु ज्ञान हेकारध्याय हेतुमउगु रूकारध्याय रू
 पमउगु ककारध्याय गनं हे मच्चंगु ॥ सकलसत्त्वप्राप्ति
 गरापिं उच्चारयाययाकारो लुपुधर्मा निकालाहधरेया
 नाविज्याकसं संवरया आत्मा भावयाये ॥ ५॥ ॥ तदनुकर
 शोधन दक्षिणाहस्ते अकारेण चन्द्रमण्डलं वामहस्ते आ का
 रेण सूर्यमण्डलं ॥ ५॥ ॥ धनंली हस्तशोधन जवगुलाहाती
 अकारेण चन्द्रमण्डल देवागुलाहाती आकारेण सूर्यमण्ड
 लं ॥ ५॥ जवे ॥ ॐ हूं चोला ॥ नमहि दधुला ॥ स्वाहा हूं अं
 गुला ॥ बोधहे चला ॥ हूं हूं हो साला ॥ फूटफूट हूं पुचिंचका
 दक्कं ॥ ॥ देपास ॥ ॐ वैं चला ॥ हूं यों दधुला ॥ ह्रीं मों अं गु
 ला ॥ हे ह्रीं चला ॥ हूं हूं हो साला ॥ फूटफूट हूं पुचिंचकादक्कं ॥
 ॥ ५॥ ॐ हूं स्वाहा ॥ वज्र ॥ ॐ हो स्वाहा ॥ यरा ॥ वज्रसत्त्वसंग

हन् वज्ररत्न मनुत्तर वज्रधर्मगायिने वज्रकर्मकुलोद्भव ॥ ॥
 ॐ तर्कितं हं तर्कितं राजहो ॥ ॥ कमलावर्तने शंखाधिष्ठान ॥
 ॥ ॐ श्रीवज्र हे हे रुद्रक हं हं फट् डाकिनीजालसम्बरं स्वाहा ॥ ॥
 पंचोपचार पूजा प्रोक्षणा ॥ ॐ स्वयं हे हे फट् ॥ ॐ स्वयं हे स
 र्वविघ्नान्सारय हं ॥ गन्ध ॥ ॐ वज्रगन्धे स्वाहा ॥ पुष्प ॥ ॐ वज्र
 पुष्पे स्वाहा ॥ धूप ॥ ॐ वज्रधूपे स्वाहा ॥ दीप ॥ ॐ वज्रदीपे स्वाहा ॥
 नैवेद्य ॥ ॐ वज्रनैवेद्ये स्वाहा ॥ लाजाञ्जल ॥ ॐ वज्रलाजाञ्जला
 य स्वाहा ॥ ॥ ॥ स्वानजाकिलं रवसुधना वलिसतय ॥ ॐ अर
 कारे मुखसर्वधर्माणामायुतपन्नत्वात् ॐ आः हं फट् स्वाहा ॥ ॥
 वलि अधिस्थान ॥ ॐ सुप्रतिष्ठितवज्रे स्वाहा ॥ ॥ मण्डलाधि
 स्थान ॥ ॐ आः हं ॥ मंत्रशोधन ॥ ॐ ह्रो ह्रीं अरं स्वाहा ॥ ॥ पा
 त्रशोधन ॥ पुनः पात्रशून्यतां भावयेत् ॥ ह्रीं कारेण पद्मभाजनं
 मां कारेण मामकी कृष्णाक्षि भुजा वज्रवज्रहस्ता हं कारेण अ
 क्षोभः कृष्णाक्षि भुजं वज्रहस्तं तत्संयुटयोगेन महारागद्र
 वीभूतं पश्येत् ॥ ॥ ॥ हनं पात्र शून्यतां भावयेत् ॥ ह्रीं कारेण प
 द्मभाजनं मां कारेण मामकी कृष्णवर्णा निकाला हा वज्र
 ज्वनाच्च ॥ हं कारेण अक्षोभः कृष्णवर्णा निकाला हातिनं
 वज्रज्वनाच्च ॥ उपनिषत्स्या संयुटयोगं महारागद्रवज्र
 मुखने ॥ ॥ पुनः ह्रो ह्रीं अरं स्वाहा ॥ ॐ सर्वभक्षकामिनी

सर्वभक्षशोधनी गृह्यवज्रिणी ज्ञाधेश्वरी सर्वद्रव्य व्यापिनी शो
 धय रहै ॥ हकार हरने वर्ण होकार गन्धनाशन ॥ होकार बीज हं
 तात्र अकारेणाभूते अमृतं प्रवेशयेत् ॥ ५ ॥ तेन वामहस्ते सं
 प्रक्षयित्वा त्रिअंगुलि पताक हस्तेन भूमि अधिष्ठानं ॥ ॐ वज्रभू
 मे हं ॥ ॥ भुक्तिं देवालाहती हाहायाना अंगुलिचिह्नं भूमि अ
 धिष्ठान याय ॥ ॥ चतुर्विंशति अंग न्यास ॥ पुं शिर ॥ जां
 चसुधा ॥ ॐ जव हापं ॥ आं लिक्षो ॥ गों देवा हापं ॥ रां हा ति ॥
 दे मिखा ॥ मां वोह ॥ कां व्यको ॥ ॐ उरु ॥ त्रिं त्यक् ॥ को हा सा
 कं सु तु ॥ लं कण्ठ ॥ कां हृदय ॥ हों कासि ॥ प्रे नाक ॥ गुं रूपा
 धा ॥ सों तो हा ॥ सुं खपा ॥ नें पौलिपचिं ॥ सिं पालित ॥ मं ला हा
 पचिं ॥ ऊं पुलि ॥ ॥ ॐ पीठे पपीठ ॥ क्षेत्रो पक्षेत्र दन्दो प
 छंद मेला पकोप मेला पक श्मशानो प श्मशानानि इति चर्यं ॥
 ततः अंग न्यास ॥ ॥ ॐ हं हृदये निमहि शिरसि ॥ स्वा हा हं
 शिरवायां ॥ वो ष हं स्वध्वदयो ॥ हं हं हो नेत्र द्वयो ॥ फं हं
 हं सर्वाङ्गे ॥ ॐ पुलिजवं ॥ ॥ ॐ वं नाभौ ॥ हां यां हृदये ॥ हों
 मां वक्त्रे ॥ हं हो शिरसि ॥ हं हं शिरवायां ॥ फं हं सर्वाङ्गे ॥
 ॐ पुलिदेयां ॥ ॥ आसन ॥ ॐ स्थानमेरक्ष हं ॥ वो ह निखं ॥ ॐ
 जोगमेरक्ष हं ॥ आत्मानमेरक्ष हं ॥ ॥ ततः स्वहृदये अका
 रेणा चन्द्रमण्डलोपरि कृत्वा हंकारं आकारं रक्तं ॐ कारं धुत्वा

हंकारानं आलिकालिपंक्तित्रयः शुक्ल-रक्त-कृष्ण-वर्णः
 मुच्चार्यः तदक्षरपरिणतं चक्र-पद्म-वज्र-वाक्विभुद्धिक्रियात् ॥

॥ भनंति भवगुह्ये अकारनं चन्द्रमण्डलया शोनेक
 स्रवर्णं हंकारः आकारः रक्तवर्णकण्ठे उंकारः शुक्लवर्णभोरे
 हंकारः अनेङ्गः आलिकालि-स्त्रं पंक्तिः शुक्ल-रक्त-कृष्ण-
 स्रवर्णः उच्चारणायानाः शुभ्र-अक्षरः परिणतजुमा-चक्र-प
 द्म-वज्र-भुलिवाक्विभुद्धियाये ॥ ५॥ रूपस्कन्धे वैरोचन-
 वेदनास्कन्धे वज्रसूर्यः ॥ संज्ञास्कन्धे पद्मनृत्येश्वरः ॥ संस्कारस्कन्धे
 वज्रराजः ॥ विज्ञानस्कन्धे वज्रसत्त्वः ॥ सर्वतथागतत्वे श्रीहेरुकवज्र
 वक्षुषोः मोहवज्री ॥ श्रोत्रयोः क्षेपवज्री ॥ घ्राणयोरीष्वा वज्री ॥
 वक्त्रे-गगवज्री ॥ संस्पर्शे-सूर्यवज्री ॥ सर्वायतनेषु ऐश्वर्यवज्री
 ॥ पृथिवीधातु-पातनी ॥ अधातु-मारणी ॥ तेजोधातुराकर्षणी ॥ वा
 युधातु-पद्मनृत्येश्वरी ॥ आकाशधातु-पद्मज्वालीनी ॥ पंचस्कन्धे
 हंकारदेवता इति ॥ ॥ ततः आलिकालिपंक्तिमध्ये रंकारप

रिणतं सूर्यमण्डलं तन्मध्ये हंकारपरिणामेन भगवन्तं कृष्णव
 र्णं षड्भुजं प्रथमभुजाभ्यां वज्रवज्रपराधरं द्वितीयाभ्यां खड्ग
 भर्जनीपाशं तृतीयाभ्यां डमरुखड्गं चतुर्मुखं मूलमुखं कृष्ण
 र्णं वामेश्वरं पश्चिमेरक्तं दक्षिणे पीतं विभाव्यं हंकारश्चि चतु
 र्मुखं स्थित्वा संभादिचतुरोमंत्रं तेनोत्पन्नचतुर्देव्यः काकास्मा

दिक्षु विदिक्षु पूर्वोत्तरयो रशिपुंजेन यमदाद्यादि॥ द्यौ द्यौ व-
 र्णानि॥ आदौ पदेशा॥ वामहस्तस्यांगुष्ठ तर्जनीभ्यां छेदिकां दत्त्वा
 ॥ धनंति आलिकांति पंक्ति मध्ये रंकार परिणत जु-
 षा सूर्यमण्डल ध्यामध्ये हंकार परिणमजुषा भगवान् उ-
 त्पत्तिजुल कक्षवर्णा खुका लाहा मूलगुनिका लाहति वज्र
 धण्डवना विज्या कक्ष निया गुनिका लाहति खड्ग तर्जनीपा
 शज्वना विज्या कक्ष स्वका गु लाहानिकाने डमरु खड्ग धडे
 याना विज्या कक्ष प्यपाखान मूलगुखा कक्षवर्णा खवे वाउं
 लिउने ह्याउं जवे ह्यासुवर्णा चिन्नायाना॥ हंकार यारशि
 प्यपाखाले संचना सुंभ आदिं प्यंगु मंत्र शुक्ल उत्पत्ति ऊ-
 पिं प्यह्म देवीपिं काकास्या आदिं दिशा रस कोणो पूर्व उत्तरे
 रश्मियां समूहं यमदाद्यादिं निगु २ वर्णापिं देवी उत्पत्तिजुल
 ॥ देपा अंगु पाचिनं छेदिका विद्या॥ X॥ ॐ सुम्भनी सुम्भ हंर
 फर॥ ॐ गृह २ हंर फर॥ ॐ गृह मय २ हंर फर॥ ॐ आनय हं
 भगवन् विद्याराज हंर फर॥ काकास्या कक्षा॥ उलूकास्या शपमा
 श्वाना स्यारक्ता श्रुकरा स्या पीता॥ यमदाद्या कक्ष पीता॥ यम
 ह्नी पीतरक्ता॥ यमदंष्ट्री रक्तशपामा॥ यम मधनी श्या मक्ष ह्ना॥
 ॥ एता देव्याया वामहस्ते कपाल परिणामेन सुम्भराजकी
 लनं नाभेरधः श्रुकां उर्ध्वनामे रूपकं धृत्वा दक्षिणहस्ते

करति परिणामेन वज्रसु झलहस्ता ॥ तदनु आकाशे रं परिण
 न सूर्यमण्डल मध्ये हैं कारेण विश्ववज्र हैं काराधिष्ठितं न
 दक्षिणा यव फल प्रमाणं वज्रकर्णिका रूपेण धोगते वज्र म
 यभूमि विभाव्य ॥ ॥ अपि देवीपिनी दे पाश लाहती कपा
 लपरिणामजुया संभराज कील त्पुंके भूरया आकार त्प
 पुंके रूप धरे यानाचं पिं जवर लाहती करति परिणामजु
 या वज्रसु झल जनाचन ॥ थनंति आकाशे रं कार परिणत
 जुया सूर्यमण्डलया मध्ये हैं कारनं विश्ववज्र हैं कारे अधि
 स्थान यानाचं पुं पुंरश्मिं तद्ये प्रमाण वज्र कर्णिका या रूप
 पजुया के नेशति वज्र मय भूमि आदि जुलधका भालपा ॥
 ✕ ॐ मेदिनी वज्रीभव वज्रवधे हं २ फट् ॥ ॐ वज्रमाकार हं वै हं
 ॐ वज्रमंजुल हं पं हं ॥ ॐ वज्रविमान हं खं हं ॥ ॐ वज्रशरजाल
 त्रां संत्रां ॥ ॐ वज्रज्वालानलार्क हं ३ ॥ इति दिग्बधन ॥ ॥ आ
 कारवर्ति हं कारनिष्पन्नेषु अष्टकुसुमेषु निवेशितान् इन्द्रादि
 विष्णान् हृदये कीलकं धृत्वा वज्रसुझलेनाको दयेत् ॥ ✕ ॥
 पक्षां स्वरूपं 'चौह पक्षस्थाने चं पिं' हं कारं उत्पन्न जेय इन्द्रा
 दि विष्णुगणया उगले कीलस्थाना मुगलं तात धका चित्त
 नायाये ॥ ✕ ॐ यद्यथा तय रसर्व उद्यान हं हं फट् ॥ ॐ की
 लय रसर्व उद्यान हं फट् ॥ ॐ हं ३ वज्रकीलय वज्रधर आशा

पयति सर्वविघ्नविनाय कानां कायवाक् चित्तवज्रा कीलय हं
हं फट् ॥ इति कीरणमंत्रः ॥ ॐ वज्रसुद्धत वज्रकीलयमा को
य्य २ हं फट् ॥ आकोट्यमंत्रः ॥ इति निर्विघ्नभावयेत् ॥ इति रक्षा च
क्रविधिः ॥ ततः स्वहृदयस्थ हंकाररश्मिमालाभिर्जग
दर्पकृत्वा अकनिष्ठभुवनंगत्वा तत्रस्थ अनादिसंसिद्धं श्री
हेरुकभगवतीसमापन्नं मण्डलेयं पश्येत् ॥ ततः हृदीजरश्मि
मालाभिराक्षय ज्ञानचक्रमाकाशे दृष्ट्वा अभिसुखमभिसंष्ट
ज्य समंत्र समय मण्डले प्रवेशयेत् ततः समरसीकृत्य मनो
मयभिः पूजादेवीभिश्च पूजयेत् ॥ ५ ॥ धनंति ध्वज हृदये
चंद्र हंकार रश्मिमालायाकं जगत्संसारयातहितयानां
अकनिष्ठभुवनेवना अनादिसंसिद्धजुया विज्याकसु श्रीहे
रुक भगवतीनं संजुक्त मण्डलसहितं खने धनंति ध्वज
हृदयवीजरश्मिमालायाकं खिचेयाना ज्ञानचक्र आकाशे
स्वया समुखेतया पूजायाना समयमण्डले प्रवेशयाये ध
नंति ज्ञानमण्डलव समयमण्डल छुट्टे जुल भालपा मा
नसिकयाकं पूजादेवीपिसं पूजायाये ॥ ॥ फैं फैं फैं ॥
जाता सुद्रा क्यने ॥ ॥ अर्घाचन मंत्र ॥ ॐ श्रीवज्र हे हे रुरु
क प्रवरसत्काराय पाध्यार्घाचमनं प्रतीच्छस्वाहा ॥ ॥ जः हं
वै होः ॥ पुष्यन्यास ॥ ॥ ॐ श्रीवज्र हे हे रुरुक हं हं फट्

डाकिनी जाल सखरं स्वाहा ॥ हृदय ॥ ॐ ह्रीं हह हं फू ॥ उप हृद
 य ॥ ॐ डाकिनी ये हं हं फू ॥ ॐ राम ये हं हं फू ॥ ॐ वरुण
 हे हं हं फू ॥ ॐ रुचिरा ये हं हं फू ॥ अति पूर्व उन्नत पश्चि
 म दक्षिणे ॥ ॥ ॐ बोधि चिन्ता मृत भांडे हं हं फू ॥ ॥ इ
 ति विदिग ॥ ॥ ५० ॥ ॐ करु २ प्रचण्ड ये हं फू ॥ ३० ॥ ॐ कु
 रु २ चण्डाक्षी ये हं फू ॥ ५० ॐ वध २ प्रभामते हं फू ॥ ६० ॐ
 त्रास २ महानासा ये हं फू ॥ अ० ॐ क्षोभ २ वीरमते हं फू
 ॥ ७० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सर्वरी ये हं फू ॥ वा० ॥ ॐ तं के श्वरी ये हं फू
 ॥ ८० ॥ ॐ फैं फैं कु म द्य ये हं फू ॥ इति चिन्त चक्र ॥ ॥ ५० ॥ फू
 २ ऐरावत ये हं फू ॥ ३० ॥ ॐ हृ २ मल्लभैर ये हं फू ॥ ५० ॥ ॐ
 पच २ वायु वेगा ये हं फू ॥ ६० ॥ ॐ भक्ष २ व सरु धिरान माता व
 तं विनै सुरा भक्षि रणे हं फू ॥ अ० ॐ गृ २ स प्र पाता लगत भु
 जंग सप वा नर्जय २ र्पो मा दे वो हं फू ॥ नै० ॥ ॐ आ क द्य २ सुभ
 द्रा ये हं फू ॥ वा० ॥ ॐ ह्रीं २ हृ य क र्णा ये हं फू ॥ ३० ॥ ॐ ज्ञो २ खगा
 नना ये हं फू ॥ इति वाक् चक्र ॥ ॥ ५० ॥ ॐ क्षो २ चक्र वेगा
 ये हं फू ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं २ वरुणो हा ये हं फू ॥ ५० ॥ ॐ ह्रीं २ सो रि
 नी ये हं फू ॥ ६० ॥ ॐ हं २ चक्र वर्मि रणे हं फू ॥ अ० ॥ ॐ किलि २
 सुवला ये हं फू ॥ नै० ॥ ॐ सिलि २ महा वला ये हं फू ॥ वा० ॥ ॐ
 हिलि २ चक्र वर्मा ये हं फू ॥ ३० ॥ ॐ धिरि २ महा वीरा ये हं फू ॥

इति कायचक्र॥ ५॥ पूर्व॥ ॐ काका स्याये हं फ॥ ३०॥ ॐ उलका
 स्याये हं फ॥ ५॥ ॐ श्वाना स्याये हं फ॥ ६०॥ ॐ भूकरा स्याये
 हं फ॥ ७०॥ ॐ यमराक्षस्यै हं फ॥ ८०॥ ॐ यमदुल्लेह्यै हं फ॥
 ९०॥ ॐ यमदंष्ट्र्यै हं फ॥ १००॥ ॐ यममण्यै हं फ॥ द्वारको
 रो योगिनीमंत्र॥ ४॥ ५०॥ ॐ चण्डग्रहश्मशानाय स्वाहा॥ ३०॥ ॐ
 ग्रहो नश्मशानाय स्वाहा॥ ५०॥ ॐ ज्वालांकुलश्मशानाय स्वा
 हा॥ ६०॥ ॐ कलंकभैरवभीषणश्मशानाय स्वाहा॥ ७०॥ ॐ अ
 दहासश्मशानाय स्वाहा॥ ८०॥ लक्ष्मीवर्णा ऊताशनश्मशाना
 य स्वाहा॥ ९०॥ ॐ घोराश्वकारश्मशानाय स्वाहा॥ १०॥ ॐ किलि
 किलश्मशानाय स्वाहा॥ ११॥ ॥ पंचोपचारपूजा॥ षोडशला
 स्या॥ ॐ वज्रवीरो हं॥ ॐ वज्रवंशे त्रों॥ ॐ वज्रमृदंगे हों॥ ॐ
 वज्रसुरजे अ॥ ॐ वज्रलाशे हं॥ ॐ वज्रमाल्ये त्रों॥ ॐ वज्रगी
 ते हों॥ ॐ वज्रनृत्ये अ॥ ॐ वज्रपुष्पे हं॥ ॐ वज्रधूपे त्रों॥ ॐ व
 ज्रालोके हों॥ ॐ वज्रगन्धे अ॥ ॐ वज्रादर्शने हं॥ ॐ रसवज्रे
 त्रों॥ ॐ स्पर्शवज्रे हों॥ ॐ धर्मधातुवज्रे अ॥ परावादनस्तुति
 ॥ ॥ ॐ वज्रसत्त्वसंग्रहात् वज्ररत्नमनुत्तरवज्रधर्मगायि
 ने वज्रकर्मकुलोद्भवा ॐ तर्कजरहं तर्किराजहो॥ ॥ स्तुति॥
 सर्वज्ञज्ञानसंदोहं जगदर्थप्रसाधकं॥ विनामशिरिवोद्भूतं
 श्रीसम्बरं नमोस्तुते॥ व्याप्तविश्वमहाज्ञानं सर्वान्मनिसदा

स्थितं॥ कृपा क्रोधं हारौ प्रं श्रीसम्बरं नमो सुते॥ २० ॥ सर्वज्ञ
 ज्ञानया समूहजुया जगत्संसारया त हितजीयु कार्यसाध
 नयाना चिन्ता माणो रत्न धं उत्पन्नजुया विज्या कल श्रीसम्ब
 रमान जिनं नमस्कार॥ संसारे व्यापी जुया महज्ञानं संयुक्त
 जुया सकलया आत्मास सदा सर्वकालं विज्याना कृपा त
 त द्वंशु क्रोधं संयुक्त जुया विज्या कल श्रीसम्बरया तजिनं
 नमस्कार॥ २१ मंत्रतर्पण॥ ॐ नमो भगवते वीरवीरेश्वराय
 हं २ फ २॥ ॐ नमः कल्पामि संनिभाय हं २ फ २॥ ॐ जयमकु
 गेत्कट भैरवाय हं २ फ २॥ ॐ नमो दंडाकरालोय भीषणसुरवा
 य हं २ फ २॥ ॐ सहस्रभुज भास्वराय हं २ फ २॥ ॐ परशुपाशानि
 भूलखंडा गधारिणे हं २ फ २॥ ॐ व्याघ्रचर्म धरधराय हं २ फ
 २॥ ॐ महाधूमाश्वकारवपुषाय हं २ फ २॥ ॥ हस्तपूजा॥ वाम
 करमध्ये रक्तपंचदलकमल ध्यात्वा॥ ॥ खड्गताहती न्पाह
 उगु लांगु पलेस्वां चिन्ताया ना॥ ॥ पुष्पन्यास॥ ॐ वैवज्र
 वाराय हं २ फ २॥ ॐ हौं यां यामिने हं २ फ २॥ ॐ हौं मों मोहिने हं २ फ
 २॥ ॐ हौं संचारिणे हं २ फ २॥ ॐ हौं संनासिने हं २ फ २॥ ॐ फ
 २२ चणिकायै हं २ फ २॥ ॐ हवज्रसत्वाय स्वाहा॥ ॐ नमो हि वैरो
 चनाय स्वाहा॥ ॐ स्वाहा हं पद्मनृते श्वराय स्वाहा॥ ॐ वोषट् हे
 रत्नसंभवाय स्वाहा॥ ॐ हौं हौं वज्रसूर्याय स्वाहा॥ ॐ फ २२ हं

परमाश्वक्त्राय स्वाहा ॥ करमुदिमध्ये स्थापयित्वा ॥ लाहा
 यादधुसतया ॥ पंचौषचारपूजा ॥ स्तुति ॥ कल्याणप्रभाविने
 कराज्वालाज्वालावलीरागहृत्स्वसंगत्रिसुखीमहासुखलता
 बालार्कविद्यारूपा ॥ सास्त्रीसर्वजगद्धृतोजयपदा श्रीवज्रवा-
 राहिका भावेन प्रणमामि सकुलरूपि श्रीवज्रनृत्ये मतं ॥ यामि-
 न्याखलुमोहनी भगवती संचारिणी सर्वदा संत्रासिन्या तथाप
 रासुविमला योगेश्वरी चण्डिका चत्वारो भुजैकस्वाननवरात्रपा
 मासितागौरिणी श्यामा धूम्र सधूसरा च सततं वन्दे पदं ताण्ड
 वं ॥ कल्याणकालया अग्निज्वालाभ्यं रश्मिप्रकाशया
 नाविज्याकलस्वदांगज्वना स्वपारदादया महासुखं रसया
 नाविज्याकलं नक्तुनि निउरुजुयात्रास् श्रीसूर्यभ्यं ह्यंगुवर्षा
 सकलयागुरुजुया जगत्संसार प्राणिगणपि उद्धारयाना
 जययानाविज्याकल सकुलश्रीवज्रनृत्ये प्रकाशजुया-
 विज्याकल श्रीवज्रवाराहीयात जियभावं नमस्कार ॥ श्रीया
 मिनीदेवी मोहनी संचारिणी संत्रासिनी चण्डिकादेवी
 भगवती निर्मलजुया योगयाईश्वरी जुयाविज्याकपिं प्यक्ता
 लाहजुया भिंरुद्धपारदात श्याम श्वेत गौर श्याम धूम्र
 धूसरवर्षा जुया लाणवपद कया विज्याकपिं देवी पितं स
 दासर्वकालं जिनं नमस्कार ॥ ॥ देवीगणयात तर्पणा वि

य॥ ॐ नमो भगवत्यै वैकुण्ठ वाराहै हूं हूं फूट ॥ ॐ नमो भगवत्यै हूं
 ॐ यामिन्यै अजिते अपराजिते त्रैलोक्यमातरे हूं हूं फूट ॥ ॐ
 नमो भगवत्यै हूं मों मोहिन्यै सर्वभूत भयावहे महावज्रे हूं
 हूं फूट ॥ ॐ नमो हूं वज्रासने अजिते अपराजिते वशं करीने
 त्रैलोक्ये हूं हूं फूट ॥ ॐ नमो हूं शोषणि रोषणि क्रोधनि
 करालिनि हूं हूं फूट ॥ ॐ नमः संत्रासनि मारणि सुप्रभेदनि
 पराजय हूं हूं फूट ॥ ॐ नमो जयविजयस्तम्भनिमो हूं हूं फूट
 ॥ ॐ नमो वज्रिणि वज्रवाराहि महायोगेश्वरि रवगे हूं हूं फूट
 भगवत्याचमनमंत्र ॥ शताक्षरवेने ॥ इति हस्त पूजा ॥
 ✕ ततः पापदेशना ॥ कृतकारितमनुमोदितमद्यमखिलं निरु
 त्तदोषाणां प्रतिदेशयामि पुरतः पुनरकरुणसम्भवं विदधे
 श्रावकखड्गजिनोत्तमजिनसुतसंभूतानि कुशलानि अ
 नुमोदितानि बोधो सम्पक् परिणामयाम्येष जिनरत्नादि
 त्रितयं शरणं यातोस्मि सर्वभावेन बोधोचितं विदधे अ
 नुत्तरमार्गं तथासेवेति ॥ ॥ जिनं यानागु कृतपितया
 का हर्षमानयानाच्च नागु संपूर्णपाप अनियादिनस
 संपूर्णदोषनाशयानाविज्याकर्मिणे ह्योने भुगु पापदेशना
 याय हनं भुगु पापस चले मयायगु सम्वरधारणायाये
 श्रावक प्रत्येकबुद्ध तथागत बोधिसत्वपिनियाकम उ

त्मज्जिज्जुल्लापानुमोदना बोधित्तानलायत भिन्नं कं परि
 णामनायाये धुपिं बुद्धधर्म संघयाके संपूर्णभावांजि
 शरणावने बोधित्तानलाययुती चित्ततये अनुत्तरमा
 र्गस जिनं सेवायाय जुल ॥ इति आदियोगप्रथम
 समाधि ॥ ॥ तदनु मैत्री करुणा मुदितोपेक्षा चतुर्ब्र
 ह्मविहारविभाव्य ॥ ५ ॥ धनंति मैत्री करुणा मुदिता उ
 पेक्षा चतुर्ब्रह्मविहार कल्पनायाये ॥ ॥ स्वभावश्च
 क्षा सर्वधर्माणां स्वभावश्चोहं शून्यताज्ञानवज्र स्वभावा
 त्मकोहं ॥ चित्तमात्रं तु वैति श्रेष्ठ बोधि संभार पुराणा
 त् ॥ ततः प्रणिधानवशात् शून्यता तः प्रतिबुधात् ॥ ६ ॥
 चित्तमात्रकल्पनायाना बोधिसंभारपुरेयाना हानं प्रणि
 धानयावशं शून्यतायाकं विमुक्तेजुया ॥ ॥ यैकारेण
 वायुमण्डलं नीलं ध्वजं भं ध्वजांकितं ॥ तउपरि रंकारेण अ
 ग्निमण्डलं रक्तं त्रिकोणं ॥ तउपरि वैकारेण वरुणमण्डलं
 वर्तुलं श्वेतघण्टाङ्कितं ॥ तउपरि लंकारेण पृथ्वीमण्डलं च
 तुरस्रं पीतं कोशेषु त्रिसृचक्रवज्रांकितं ॥ तउपरि सुंकारेण
 सुमेरुं चतुरस्रं अष्टभुजं गोपशोभितं ॥ तउपरि भ्रूंकारेण
 रूपगारं चतुरस्रं चतुर्द्वारं चतुस्तारशोभितं महामोक्ष
 पुरवैरोचनस्वभावं ह्यराईह्य वज्रलिक कर्मशीर्षपय

नं॥ तडपरि पेंकारेण विश्वदलपम तन्मध्ये हेंकारेण विश्वव
 ज तन्मध्ये पेंकारेण विश्वपद्मावृदलं तडपरि आलिकालि
 द्विगुरोन चन्द्रमण्डलं सूर्यमण्डलं च तयोर्मध्ये आकाशस्थं
 हेंकारस्फुरणं संहरणात्मकं तत्सर्वपरिराजं आराधेयं मण्ड
 लस्थं श्री हेरुकसमाण्डलेयमात्मानं भावयेत् ॥ ॥
 येंकारणं वायुमण्डल उत्पत्तिजुल नीलवर्णं धनुकुवांतू
 धजायाचिहूड ॥ ध्यायंयवने रेंकारणं अग्निमण्डल रक्तव
 र्णं स्वकुंला ॥ ध्यायंयवने वेंकारणं आपमण्डल उलिच्चा
 नुधूवर्णं यरुयाचिहूड ॥ ध्यायंयवने लेंकारणं पृथ्वीमण्ड
 लं प्यकुंला सासुवर्णं कुनेरत्रिसूचिकवज्रयाचिहूड ॥
 ध्यायंयवने सेंकारणं सुमेरुपर्वतं प्यकुंला चासिलिंदया
 शोभादयाचंग ॥ ध्यायंयवने भ्रेंकारणं कूपगारं प्यकुं
 ला प्यंगुहारं प्यंगु तोरणादया शोभालानाचनं महामो
 क्षपुर वैरोचनयास्वभावं हारं मुतिमा अर्द्धहारं मुतिमा
 लायाविशेषं आमातं लक्षणायाचिहू कौसिमो ध्यंक द
 याचंग ॥ ध्यायंयवने पेंकारणं विश्वपद्मं ध्यामध्ये हें
 कारणं विश्ववज्रं ध्यामध्ये पेंकारणं विश्वपद्मं च हूडगुं
 ध्याच्चे आलिकालिभुके चन्द्रमण्डलं सूर्यमण्डलं ध
 यामध्ये आकाशेचंग हेंकारस्फुरणं संहरणं तु या धसं

पूर्णपरिणतजुया मण्डलेविज्याकस श्रीहेरुक् आदि स
कलमण्डलयादेवताया आत्मा भावनायाये ॥

तत्रात्मानं कृत्वा चतुर्भुवं मूलमुखं कृत्वा वामेश्यामं पश्चि
मेरुक्तं दक्षिणोपीतं विस्तृताननं दंष्ट्रोत्कटभीषणं प्रतिमुखं
रक्तवर्तुलत्रिनेत्रं विश्ववज्रांकितमौलिनं जयमकुटिनं वा
मेवलिनार्द्धचक्रधारिणं दक्षिणे श्रृङ्गमुखं वज्रमात्मायंभि
नपंचकपालधारिणं द्वादशभुजं आलिंगनभुजद्वयेन व
ज्रवज्रघण्टाधरं द्वितीयभुजद्वयेन गजचर्माम्बरधरं तृतीय
भुजद्वयेन डमरुखट्वांगधरं चतुर्थभुजद्वयेन करतिरक्त
पूर्णकपालधरं पंचमभुजद्वयेन परशुपाशाधरं षष्ठभु
जद्वयेन त्रिशूलस्रगिरधरं शतार्द्धनरशिरमात्माधारि
णं व्याघ्रचर्मनिवासनं शृंगारवीरवीभत्सरोद्रहास्त्रभ
यानककरुणाद्रुतशान्तिनवनाद्यरसान्वितं करिणं ऊणु
लकेयूरशिरोमणि यज्ञोपवीत भस्मश्र्वेति षण्णुद्रा मुद्रि
तरविमण्डले वामदक्षिणभागे पतितभैरव कालिरात्री
वामकर्णासनसुगलयोः आलीयसनस्थितं भगवन्तं भा
वयेत् ॥ श्रीहेरुक्मा आत्मा कृत्वा वर्णाः प्यपारक्षा
मूलगुखा कृत्वा वर्णाः देवास वाउँ वर्णाः लिउने त्याउँ वर्णाः
जवे त्यासुवर्णाः वा कूद्धिना विकारजूगुलिं ग्पाना पुगुमूर्ति

स्नापनिकं ह्यंगु रतिचिंयु स्वंगमिखा विश्ववज्रयाचि
 रुडशिरे जयमकुं पुया देपा पारे अर्धचन्द्र जवे कवं
 छौ वज्रमालागठिहि ना न्याग कवछौ कपाले भारणाया
 नाविज्याकल हिनिक्तालाहा मूलयुनिकाताहाति श्री व
 ज्रवाराही आलिंगनाया न वज्रघण्टज्वनाविज्यात निकाय
 लाहानिकां क्रिसि ह्यंगु ज्वनाविज्यात स्वकाय लाहानिकां
 डवर खडांग ज्वनाविज्यात प्यकाय लाहानिकां कर निः
 हिंयुरेजूय पात्रज्वनाविज्यात न्याकाय निकाताहात पा
 स्विप धरेयानाविज्यात पुकाय निकाताहात त्रिभूर ब्रह्म
 शिर ज्वनाविज्यात नेम ५० नरशिरमातां कखाया धुंया
 ह्यंगुतिन्यया भंगार १ वीर २ वीभत्स ३ रौद्र ४ हास्य ५ भ
 यानक ६ करुणा ७ अक्रुत ८ शक्ति ९ नवनाथ रस सं
 युक्तयाना करिष्ठ १ कुण्डल २ केयूर ३ शिरोमणि ४ यज्ञोप
 वीत ५ भस्म ६ अतिखुगु सुप्रान्तिया सूर्यमण्डले खवे
 जवे भैरव कालिरात्रीया देपाय ह्यपं सनमण्डल या
 दधूर्द्धुया आलीरुपदकया विज्याकल श्रीभगवान् या
 त भावनायाये ॥ ॥ भगवतीवज्रवाराही रक्तवर्णा मुक्त
 केशात्रिनेत्रा एकवक्त्रा दिगम्बरा रणुमणितकतिमेखलादि
 भुजा वामभुजेन रक्तपूराकपालधरा दक्षिणाभुजेन डटतर्ज

निकर्तिका भवद्रुधिरानना जंघाद्वयेन भगवन्तं समागृह्णातु
रागयतीं भगवती भावयेत् ॥ ॥ भगवती श्रीविज्ज्वारीहो
क्तवरी सैखरेयाना स्वंगमिरादना छपाखा जुयाविज्या
कल दिगंबर कुचरहनायु जमीनं त्रियाविज्याक निमला
हा देपायुलाहंतं हिं पूर्यायु पात्रज्वना जवयुलाहंतं उष्ट
यातत्रासवियत कर्तिज्वना श्रीहेरुकयात आतिंगनायाना
महासुखं विज्याकल भगवतीयात भावनायाये ॥ ॥

ततः समयचक्रेऽभ्यनरे अक्षरोत्पन्न विश्वाष्टदल कमल
स्वरूपं माहेन्द्रमण्डलाख्यं विश्ववर्णात्रिचक्रीरूपं श्रीका
राधिष्ठितं रत्नावलिपरिवृतं महासुखकायात्मकं चित्तवा
क्कायस्वभावं भावयेत् ॥ ॥ भनंति समयचक्रेऽने ॐ
आः हूं स्वंग आखलं उत्पन्न जुयाचंगु विश्वपद्म आहउय
पलेसां स्वरूप पृथ्वीमण्डले आरुरुयानाचंगु नानाप्रका
रयावर्णा काय वाक्चित्त स्वंगुचक्रयास्वरूप श्रीकारे
अधिष्ठानयानाचंगु रत्नया मातां चाउलाचंगु महासुख
कायया आत्माजुयाचंगु काय वाक्चित्त स्वभावजुया
चंगु भावनायाये ॥ ॥ तत्र पूर्वडाकिनी नीला उत्तर प
त्रे रामा हरिता पश्चिम पत्रे खण्डोहा रक्ता दक्षिण पत्रे
रूपिणी पीता ताः सर्वाः शवाख्यासंस्थिता एकवक्त्राश्च

बुधुजा नमो क माल खदांग दक्षिरोडमरू कर्तिका दंडाकरा
 लवदनाः त्रिनेत्राः पंचसुद्रा विभूषिताः ॥ ॥ धसमयचक्रे च्याह
 पल्पस्त्रां यामभ्ये पूर्वयाउहले नालवरीस डाकिनी देवी ॥ ३
 नरपत्रे हरितवरीस रामा देवी ॥ पश्चिमपत्रे रक्तवरीस खणु
 रोहा देवी ॥ दक्षिणपत्रे पीतवरीस रूपा देवी ॥ ४ ॥ पिसं कल्पं
 प्रेतासनयाना चंपिं सुपारवा म्पकाता हा देपाता हा निकानं
 पात्र व खदांगज्वना जवेनिकाता हातं दव २ व कर्तिज्व ना
 चंपिं वा कूछिना ग्याना पुगु खा जु या चंपिं संगमिखा संपिजे
 याना पंचसुद्रां त्रिया विज्या कपिं ॥ ॥ विदिग्दलेषु चत्वारि
 दोषि चित्तमृत पूर्ण कपालिनी ॥ ॥ कुने २ चंय हले प्यखसं
 पंग दोषि चित्तमृतं पुरे जुमा चंय पात्र ॥ ॥ तद्विचिन्न
 चक्रे हंकारजं अष्टारं आपमणुता रूठं कल्पहेकारा विष्टितं
 कजावलिपरि वृतं धर्मका या त्मकं स्वर्गरूपं खेचरी स्वभावं चि
 नयेत् ॥ ॥ धं पिने चित्तचक्र हंकारं उत्पत्ति जु या चंय
 च्या चोत् आपमणुते आरूठ या ना चंय कल्पवरी हेकारे
 अधिष्ठानयाना चंय कजावलि चाउता चंय धर्मका य आत्मा
 स्वर्गरूप आकाशे चले जीगु स्वभाव जु या चंय चित्तना यये
 ॥ ॥ तत्र पुंजे पूर्वोरे पुष्पी लमत ये खणु कपाल प्रचणा
 देवी ॥ जो जे उन्नरा ले जातं धरे महा कं काल चणु क्षी ॥ ओं जे प

द्विमारे ओडियाने कंकालप्रभामती॥ ओं जे दक्षिणारे आ
 र्जुदे विकटदंष्ट्री महानासा॥ इति प्रथमं मुदिताभूमिदानपा
 रमिताः सुखज्ञान॥ ॥ गौं जे आग्नेयारे गोडावर्या सुरावेदि
 वीरमती॥ रां जे नैऋत्यारे रामेश्वर्या अमिताभखर्वरी॥ दें जे वा
 युधारे देवीकोटे वज्रप्रभलंकेश्वरी॥ मां जे ईशानारे मालवे
 वज्रदेहकुमच्छाया॥ इति उपपीठविमलाभूमि शीतपारमि
 तासमुदयज्ञान॥ इति चिन्नचक्र॥ ॥ ५ ॥ चिन्नचक्रे पूर्वया
 चोलेः खण्डपालदेव प्रचण्डदेवी सुलीलमलयपीठसुवी
 जं उत्पत्तिजुयाचंगु॥ गौं वीजं उत्पत्तिजुयाचंगु उत्तरया चो
 लेः जालंधरे महकंकालदेव चण्डाक्षीदेवी॥ ओं वीजं उत्पत्ति
 जुयाचंगु पश्चिमया चोले ओडियाने कंकालदेव प्रभामती
 देवी॥ ओं वीजं उत्पत्तिजुयाचंगु दक्षिणया चोले आर्जुदे विकट
 दंष्ट्रीदेव महानासादेवी॥ ॥ ५ ॥ मुदिताभूमिदानपारमिता
 सुखज्ञान॥ ॥ गौं वीजं उत्पत्तिजुयाचंगु अग्नेकोशे गोडावरी
 सुरावीरदेव वीरमतीदेवी॥ रां वीजं उत्पत्तिजुयाचंगु नैऋत्यको
 शे रामेश्वरी अमिताभदेव खर्वरीदेवी॥ दें वीजं उत्पत्तिजुयाचं
 गु देवीकोटे वायुव्यकुने वज्रप्रभदेव लंकेश्वरीदेवी॥ मां वी
 जं उत्पत्तिजुयाचंगु ईशानकुने मालवे वज्रदेहदेव कुमच्छा
 यादेवी॥ ॥ ५ ॥ उपपीठविमलाभूमि शीतपारमिता समुद

यज्ञान॥ ॥ धुलिचिन्नचक्र॥ ॥ ततः सोहिवाक्चक्रे आ
 कारनिर्जातं अष्टारं तेजोमण्डलारूढं सूक्ष्माधिष्ठितं रक्त
 पद्मावलिपरिवृतं संभोगकायात्मकं मर्त्यस्वभावं भूचरि
 स्वभावं चिन्नयेत्॥ ॥ तत्र कौंजे पूर्वादे कामरूपे अंकुः
 लिङ्गदेरावती॥ औं जे उत्तरादे ओम्ने वज्रजटिलमहाभैरवा
 ॥ इति क्षेत्रप्रभाकराभूमि क्षान्तिपारमिता निरोधज्ञान॥ त्रिं
 जे पश्चिमादे त्रिशङ्कनो महावीर वायुवेगा॥ कौंजे दक्षिणादे
 कोशलायां वज्रहंकार सुराभक्षी॥ इति उपक्षेत्र अर्चिष्मती
 भूमि वीर्यपारमिता मार्गज्ञान॥ कौंजे अग्नेयारे कलिंगे सुभद्रा
 श्यामा देवी॥ लैंजे नैऋत्यारे लंपाके वज्रप्रभ सुभद्रा॥ इति छ
 न्नाह अभिमुखी भूमि ध्यानपारमिता क्षयज्ञान॥ कौंजे वायुव्या
 रे कौंजां महाभैरव हयकर्णी॥ हिंजे ऐशानारे हिमालये वि
 रूपाक्षयगानना॥ इति उपरुद्धे सुउर्जया भूमिप्रज्ञा पार
 मिता अलत्यादज्ञान॥ इति वाक्चक्र॥ ॥ धनंति वाक्चक्र
 आधार उत्पत्तिजुयाचं गु च्चाचे उ तेजमण्डले आरूढयाना
 चं गु सूक्ष्मादे अधिष्ठानयानाचं गु ह्याउं पद्मावलिचाउला
 चं गु संभोगकायआत्मा मर्त्यमण्डलस्वभाव भूमीचलेजी
 गु स्वभावचिन्ननामाये॥ ॥ ध वाक्चक्रैः पूर्वयाचंते कौं
 वीर्ज उत्पत्तिजुयाचं गु कामरूपे अंकुलिङ्गदेव ऐरावती देवी

ओंकारं उत्पत्तिजगु उन्नयाचने ओम् वज्रजटिलदेव महाभै
 रवादेवी ॥ अतिक्षेत्रप्रभाकरीभूमि क्षान्तिपारमिता निरोध
 ज्ञान ॥ त्रैकारं उत्पत्तिजुयाचंगुः त्रिशक्ती महावीरदेव वा
 युवेगादेवी ॥ कौंवीजं उत्पत्तिजुयाचंगुः दक्षिणयाचने कोश
 लास वज्रहंकारदेव सुराभक्षीदेवी ॥ इति अतिउपक्षेत्र अर्चि
 पतीभूमि वीर्यपारमिता मार्गज्ञान ॥ ॥ कौंवीजं उत्पत्तिजुया
 चंगुः अग्निकुने कतिंगे सुभद्रादेव श्यामादेवी ॥ तंकारं उत्प
 त्तिजुयाचंगुः नैर्ऋत्यकोरो तं पाके वज्रप्रभदेव सुमद्रादेवी
 अति छन्दोह अभिसुरीभूमि ध्यानपारमिता क्षयज्ञान ॥ कौं
 वीजं उत्पत्तिजगुः वायुवकोरो कौंचीस महाभैरवदेव हय
 कर्णादेवी ॥ हिंवीजं उत्पत्तिजगुः ऐशानयाकोरो हिमालये
 विरूपाक्षदेव खगाननादेवी ॥ अतिउपछन्दोह सुहर्जया
 भूमि प्रज्ञापारमिता अनुत्पादज्ञान ॥ अतिवाक्चक्र ॥ ॥
 ततो वायुकायचक्रे ओंकारं अष्टारं वायुमण्डलारूढं शु
 क्तककाराधिष्ठितं चक्रावतिसमलंकृतं निर्माणा कायात्म
 क मातालस्यभावं माताल वामिनीस्वरूपं भावयेत् ॥
 धंदिने कायचक्र ओंकारं उत्पत्तिजगुः चाचोत् वायुमण्ड
 ले आरूढयानाचंगुः त्र्युगु ककारे अधिष्ठानयानाचंगुः
 चक्रावलिं चाउलाचंगुः निर्माणा कायआत्मा मातालस्यभाव

पातालवासिनीया स्वरूप चिन्तायाये॥ ॥ तत्र प्रैजे
 वीरे प्रेतपुर्यां महावल चक्रवेगा॥ ॥ गुंजे उत्तरारे गुरुदेवताया
 रत्नवज्र स्वगुरोरा॥ इतिमेलापक उरंगमाभूमि उपाय पारमिता
 धर्मज्ञान॥ ॥ सौंजे पश्चिमारे सौराष्ट्र हयग्रीव सौरिणी॥ ॥ सुंजे
 दक्षिणारे सुवर्णाक्षीमे आकाशगर्भ चक्रवर्तिनी॥ इतिउपमे
 लापक अचलाभूमि प्रणिधि पारमिता नवज्ञान॥ ॥ नैजे अग्ने
 यारे नगरे श्रीहेरुद सुवीरं॥ ॥ सिंजे नैऋत्यारे सिंधो पद्म
 नेश्वर महावला॥ इतिउपमान साधुमतीभूमि वलपारमिता
 संवत्तिज्ञान॥ ॥ मंजे वायुवारे मल्लो वैरोचन चक्रवर्तिनी॥ ॥ कुंजे
 ऐशानारे कुलताया वज्रसत्त्व महावीर्या भावयेत्॥ इतिउप
 मज्ञाने धर्ममेधाभूमि ज्ञानपारमिता परचिन्ताज्ञान॥ ॥
 ॥ ॐ वीजं उत्पत्तिज्जुयाच्चं गु पर्वयाचते प्रेतपुरीस महा
 वलदेव चक्रवेगादेवी॥ ॥ ॐ वीजं उत्पत्तिज्जु उत्तरयाचते ग
 रुदेवतास रत्नवज्र देव स्वगुरोरादेवी॥ ॥ ॐ लिमेलापक उ
 रंगमाभूमि उपाय पारमिता धर्मज्ञान॥ ॥ सौं वीजं उत्पत्तिज्जु
 गु पश्चिमयाचते सौराष्ट्र हयग्रीव देव सौरिणीदेवी॥ ॥ सुं
 वीजं उत्पत्तिज्जु दक्षिणयाचते सुवर्णाक्षीमे आकाशगर्भ
 देव चक्रवर्तिनीदेवी॥ ॥ ॐ लिउपमेलापक अचलाभूमि प्र
 णिधि पारमिता अन्वयज्ञान॥ ॥ नै वीजं उत्पत्तिज्जु अग्नेकुने

नगरे श्रीरुरुदेवः सुवीरादेवी॥ सैवीजं उत्पत्तिजगु ने ऋत्प
 याचते सिंधुसः पद्मनृत्येश्वरेदेवः महाबलादेवी॥ धुलिः श्मशानः सा
 धुमतीभूमिः वलपारमिता संहतिज्ञान॥ सैवीजं उत्पत्तिजगु वा
 पुष्याचते मरुसः वैरोचनदेवः चक्रवर्तिनीदेवी॥ कुंवीजं उत्प
 त्तिजगु ईशानयाचते वज्रसत्त्वदेवः महावीर्यादेवी चिननाया
 या॥ धुलिः उपश्मशानः धर्ममेधाभूमिः स्तानपारमिता परचिन्त
 ज्ञाना॥ ॥ इति कायचक्रा॥ ॥ खण्डकपालादयो वी
 राः एकवक्त्राश्चतुर्भुजास्त्रिनेत्रा जयमकुटिनः आलिंगनभु
 जद्वयेन वज्रवज्रधराधरं अपरभुजद्वयेन उमरुखट्वांग
 धरं पंचमुद्राविभूषिता आलीयसनस्थिताः॥ ॥ ध्वनि
 चक्रे चंपिं खण्डकपाला आदिं वीरगरापिं छुपारखाः संगमि
 खाः जयमकुटं पुष्याविज्याकः निष्कालाहंतं देवी आलिंगन
 याना वज्रधराज्वना विज्याकः निष्कालाहंतं उमरुखट्वांगज्व
 नाः पंचमुद्रांतियाः आलीयपदकया विज्यात॥ ॥ प्रचण्ड
 यादेवः एकवक्त्रा द्विभुजा आलिंगनकपालहस्ता दक्षिणी
 कर्तिकाः त्रिनेत्रा रौद्ररूपिणी मुक्तकेशा अहययोग समापन्ना
 महारागा नुरागिनादिगन्धरा पंचमुद्राविभूषिताः॥ ॥
 प्रचण्डादिं देवीगरापिं छुपारखाः निष्कालाहः आलिंगना
 याना खट्वाहंतं पात्रज्वनाः जवलाहंतं करतिज्वनाः स्वर्गा

मिखाकना भयंकररूप सैं छरेयाना निहमभेदमडगु योगंसं
 युक्तयाना महारागसरनियाना दिगम्बरजुया पंचमुद्रांति
 याविज्यादल ॥ ॥ ततः पूर्व द्वारे काकास्या नीला उत्तर द्वा
 रे उत्तर कास्या हरिता पश्चिम द्वारे श्वाना स्या रक्ता दक्षिण द्वारे
 शूकरा स्या पीता अग्ने कोरो यमदायी नीलपीता नैऋत्य को
 रो यमहृती पीतरक्ता वायुव्य कोरो यमदंष्ट्री रक्त श्यामा ई
 शान कोरो यममथनी श्याम कृष्णा भावयेत् ॥ ॥ भनंति
 पूर्वया द्वारे काकास्या देवी नीलवर्णा उत्तरया द्वारे उत्तरका
 स्या देवी वाउँ वर्णा पश्चिमया द्वारे श्वाना स्या देवी साउँ वर्णा
 दक्षिणया द्वारे शूकरा स्या देवी सा सुवर्णा अग्निकुने यमदा
 यी देवी हाऊ वद्धि सा सुवद्धि वर्णा नैऋत्य कुने यमहृती
 देवी सा सुवद्धि साउँ वद्धि वर्णा वायुव्य कोरो यमदंष्ट्री दे
 वी साउँ वद्धि वाउँ वद्धि वर्णा ईशान कुने यममथनी देवी
 वाउँ वद्धि हाऊ वद्धि वर्णा चिन्ननाथाये ॥ ॥ एता योगि
 न्यः एकवक्त्रा श्वमुखजा मुक्तकेशा शवासना दिगम्बरा
 पंचमुद्राविभूषिता कपाल खट्वांगवामंच दक्षिणो डम
 रु कर्तिका दंष्ट्रा करालवदना विभाव्य ॥ ॥ भुवि
 देवीगराणि दूपाख्या प्यकातास्तु सैं किजेयाना प्रेत
 आसनयाना दिगम्बरजुया पंचमुद्रांति या देपागुनि

कालाहंत पात्रः स्वदांगज्वना ज्वरु निष्कालाहंतः दव
 दवः कर्तिज्वना वाक्कुक्षिना भयानकमूर्तिजुया विज्याधि
 विननायाये ॥ ॐ आः हं शुक्ल रक्त दध्मवर्णा शिर
 कष्ट हृदयेषु विभाव्य ॥ स्वर्गमध्य पाताल एकमूर्तिभवेत्
 क्षणात् ॥ ॥ धनः पद्मगुशिरे त्रयूगु ॐ कारः करेष्ट हाउं
 गु आकारः हृदये नील हंकार चनः स्वर्गमध्य पाताल दे
 गुमूर्तिजुगु क्षणमात्रं भावनायाये ॥ ॥ धनंतिः हा
 पाथं षडङ्ग न्यासयाये ॥ ॐ आः हं सर्ववीरयोगिनी
 कायवाक् चित्तवज्र स्वभावात्मकोऽहं ॥ ॐ वज्रशुद्धाः सर्वध
 र्माणां वज्रशुद्धोऽहं ॥ ॥ धृतिमंत्रवोने ॥ ॥ समानीतज्ञा
 नचक्रमाकाशदेहो दृष्ट्वा जः हूं वं होः ॥ आत्मनि मण्डलेषु
 चाक्षय्य ॥ ॥ धनंति चैकनागु ध्यानवना ज्ञानचक्र आ
 काशे स्वया जः हूं वं होः धृतिमंत्रं पद्मगु शरीरे आकर्ष
 शायाना प्रवेशयाना भवहे श्रीहे रुजुल पवके ज मां
 मण्डल खाराजुलधका चित्तनायाये ॥ योगशुद्धाः
 सर्वधर्मा योगशुद्धोऽहं ॥ ॥ धृतिमंत्रवोने ॥ ॥ तदनुः
 धनंति ॥ ॥ अभिषिंचितुमां ॥ सर्ववीरयोगिनी श्रीहेरु
 कवज्रस्वभावात्मकोऽहं ॥ यथादि जातमात्रेण स्नायिता
 सर्वतथागताः ॥ तथा हं स्नापयिष्यामि शुद्धं दिव्येन वारिणा

ॐ आः हं सर्वतथागत अभिषेकसमय भ्रिये हं ॥ अने
 मेककाये ॥ अभिषेकं महावज्रं त्रैधातुकनमस्कृतं ॥ ददामि
 सर्वबुद्धानां त्रिगुणालयसंभवं ॥ ५ नमस्तु भवना ॥
 इदं तत्सर्वबुद्धानां त्रैधातुकनमस्कृतं ॥ पुष्पांकं पूजनार्थाय मकु
 रपंचकुलोद्भव ॥ ॐ सर्वबुद्धचूडामणिमहामकुटं प्रतीक्षु स्वा
 हा ॥ ॥ मध्ये ॥ ॐ वज्रधातेश्वरी अभिषिचन्तु ॥ १० ॥ ॐ व
 ज्रवज्रिणी अभिषिचन्तु ॥ २० ॥ ॐ रत्नवज्रिणी अभिषिचन्तु ॥ ३० ॥
 ॐ धर्मवज्रिणी अभिषिचन्तु ॥ ४० ॥ ॐ कर्मवज्रिणी अभिषि
 चन्तु ॥ ५० ॥ इति कुण्ड ॥ अथाभिषिक्तत्वं मसिबुद्धे
 र्ब्रह्माभिषेकतः ॥ इदं तत्सर्वबुद्धत्वं गुरुकजसुसिद्धये ॥ ॥
 वज्र ॥ ॐ वज्राधिपतिस्त्वामभिषिचामि जितवज्रसमय
 स्त्वेहोः वज्रयण्ड अअ ॥ परा ॥ ॐ वज्रसत्त्वस्त्वामभि
 षिचामि वज्रनामाभिषेकतः ॥ ॐ श्रीहेरुक्कनामतभागस्त्वं भूर्भु
 वः स्वः ॥ १० ॥ नाम ॥ ॥ भनन्ति मकुटपूजायाये भवगुणि
 रे पंचबुद्धस्वरूपनं ॥ पा. पु. पं. रा. स्तुति ॥ ॥ पुनः
 आकर्षण ॥ ॥ भनन्ति हनं चेकना गुध्यानवना मण्डल
 सहितं श्रीहेरुक्क वज्रवाराही आकर्षणायाना आकाशे वि
 ज्ञाका पादार्पणं चोपचारपूजायाना जः हं वं होः भुतिमं
 त्रवीना समयमण्डले प्रवेशयाना स्वाद्वय ॥ ॥ चैकनाम्भं

वज्रजनायणभाये ॥ ॐ वज्रसत्त्वसंग्रहात् वज्ररत्नमनु नर वज्रधर्मगायिने वज्र
 कर्मकुलोद्भव ॥ ॐ इति जहं रत्नकिरणोः ॥ ॥ आलिङ्गनमुद्रा ॥ ॐ श्रीहेरुक्क
 क वज्र स्वभावात्मकोऽहं ॥ ४ ॥

पंचोपचारपूजा तास्याः स्तुतिः ॥ श्रीचक्रसम्बरसुसम्बर
वज्रडाकं वीरेश्वरी प्रवर वीरगणाधिराजं ॥ कोलानना ललित
वा ऊयुगो पगुरुं कारुण्यनिर्भरं मामितवांघ्रिपद्मं ॥ योगैकल
भ्यः भवबन्धनभेदकारी विस्फारितैर्बुद्धपरिशुद्धशरीरसारः
प्रध्वस्तदोषदुरितामलबोधरूपं संपूज्य नोमि तवपादसरोज
रेणुं ॥

॥ श्रीचक्रसम्बर उन्नमसम्बर वज्रडाक नाम तथा
गत उन्नम वीरेश्वर वीरेश्वरीगणाय राजाजुयाविज्याकल
श्रीवज्रवाराहीया सुन्दरु ताहानिकां द्यसपुकाविज्याकल
रुणाया खानिजुयाविज्याकल छलपोलया चरणाक्रमल
सजिनं नमस्कार ॥ उन्नमयुयोगयाना संसारयागुवधनं छु
तेयानाविज्याकल सकलवृद्धगणपिं प्रकाशयाना शुद्धनि
र्मलगु शरीरजुयाविज्याकल संपूर्णयाप दोषमलयात
नाशयाना मलछुमदयका सकलयातबोधयायगु रूपजु
याविज्याकल थपिंल छलपोलया चरणाक्रमलस पूजाया
ना जिनं नमस्कारयाये ॥ तर्पणा चैकनागुमंत्रं ॥

इति मण्डलराजश्रीर्नाम समाधिः ॥

॥

॥

ततः आलिकाति पंक्ति पंचरश्मिकास्फुरन् देवतावन्द्यज्ज्ञा
रयन् दक्षिणवायुनासानिसृत्य जगन्निचक्रीक्षत्य अना
दिसंसिद्धं वीरुं वीरणा समरसीम्भत्वा वामनासाधुटेन प्रवि

श्प नाभौ प्रतिविम्बवत् श्वासाकार चक्रमण्डलीभूतान् विचि
 न्पतत्र ऊर्ध्वमिति शुक्लहंकारं तच्च बीजपरिरातं भगवन्तं सह
 जसम्बरं शुक्लवर्णं मालीयसनस्थं माकाशचित्सदृशं द्विभु
 जं एकवक्त्रं वज्रवज्रयराधरं उभयाभ्यां वज्रकपालधारिणीं
 द्विभुजं एकमुखं रक्तवर्णं वज्रवाराहीमात्मानं विभाव्य ॥ तयो
 र्मायासुरतद्वनिनादृष्टजैधातुकान् चक्रक्रमेण भावयेत्
 जगन्निष्मशानेषु स्मशानानि समयचक्रे समयचक्रं काय
 चक्रे कायचक्रं वाक्चक्रे वाक्चक्रं चित्तचक्रे चित्तचक्रं उ
 किनीषु उकिनीषु यथायथा तेषु बीजेषु भगवन्मुखे
 भगवतो द्विभुजतत्प्रज्ञाया प्रतिष्ठाभावनीया ॥ तेषु समयसु
 रतमहाद्रवापन्नेन तद्रवपरिरातं सिन्धुरोरक्ताक्षरसदृशं हं
 कारं महासुखमयभावयेत् ॥ तत्र उकारे उकारं उकारं रुकारे
 रुकारं शिरसि शिरोर्ध्वचक्रे अर्धचन्द्रविन्दो विरुं नादे ना
 दं च वाताग्रशंतसहस्रकोटिभागरूपं चिन्तयेत् ॥ निर्विकल्प
 महासुखमयचिन्तनिरूपयेत् ॥ खेदेशे ऊर्ध्वमिति त्रिमण्डलचक्र
 मक्षिमुच्य ॥ ॥ धनंति आलि कालिया पंक्तिं पंचरश्मिप्र
 काशजुया देवताया समूह उच्चारणयाना जवशुलसघातं
 वायुपिहं वना जगत्संसार त्रिचक्रयाना अनादिमिद्धजु
 या विन्याकसु वीर वीरेश्वरी नापमिद्धे जुया वया देपाशु

सघातं इहं वना नाभीस हस्तनभ्यं श्वासया आकारं चन्द्रम
 शुलजुलधका चिन्तनायाये ॥ ध्रुवचन्द्रमण्डले पतरबुनं तुष्ट
 गुरुं कुरु ध्वजीजपरिणामजुया भगवान्सहजसम्बर तुष्टव
 र्णी आलीठपदकयाविज्याकल आकाश चित् स्वरूप निकाता
 स छपाखा वज्रघण्टज्वनाविज्याकल श्रीवज्रबाराही छपाखा नि
 काता स रक्तवर्णी वज्र कपालधरेयानाविज्याकल चिन्तनायाना
 संपूर्णमण्डल खराजुल भातये ॥ ७५ ॥ निरुपमा माया सुरत श
 दयाकं विवेचयाना त्रैधातुया आत्माजुया चंद्र चक्र क्रमभ्यं
 भावनायाये ॥ नगत्संसारश्मशाने लीनजुल श्मशान समय
 चक्रे लीनजुल समयचक्र कामचक्रे लीनजुल कामचक्र वा
 क्चक्रे लीनजुल वाक्चक्र चित्तचक्रे लीनजुल चित्तचक्र
 उक्तिनीगणपिके लीनजुल उक्तिनीगणपि धनंशु बीजे लीन
 जुमा भगवान् द्विभुज भगवती श्रीप्रज्ञाया के लीनजुल धका
 चिन्तनायाये ॥ ७६ ॥ निरुपमं समुद्रसुरत महारागयाकं प्रवजु
 या ध्रुव परिणामजुया सिंहसंग मुनिभ्यं तुष्ट तुष्ट निगुरंग
 या हंकार मण्डलसुखमयजुलधका चिन्तनायाये ॥ ७७ ॥ निरुपमा
 र उकारे लीनजुल उकार हकारे लीनजुल हकार शिरेली
 नजुल शिर अर्धचक्रे लीनजुल अर्धचन्द्र कृती लीनजु
 ल धकृति नादे लीनजुल धनादशब्द ऊं चिकिसजुया

तापनादना सृष्टि वे छवो दीन छि वे छवो लक्ष्मि वे छवो को
 टि वे छवो भागजुया रुंरुंतायमयावन शून्यजुल भालपे॥
 निर्विकल्प महसुखमय चित्तजुल भालपे॥ आकाशेश्वरामा
 त्रनं त्रिमणुलचक्र खाराजुल भालपे॥ ॥ धनंति चे कना
 गुण्यं ध्यानयाना आकर्षणा पादार्थ स्वांघ्रये पंचोपचार पू
 जा लास्या स्तुति॥ नमो॥ ॥ इति मूल योग तृतीय समाधि
 किंचित् सूक्ष्मयोगनाम॥ ॥ धनंति जापयोग॥ ॥
 नाभिचन्द्रे स्वेतरक्त हंकारं नादात्मन्त्र माला उभाय मुखान्निर्गत्य
 स्वनाभौ प्रविश्य वज्रभागे यमगृहीत्वा अवधूती मार्गेशोभाय
 भगवती मुखान्नि सृष्ट्य स्वमुखद्वारे प्रविश्य नादे विलीय पुनस्त
 स्मा उभाय सर्वत्र भ्रमनीं विभावयेत्॥ भगवतो भगवत्या मूल
 मंत्राभ्यां जापयेदिति जापविधिः॥ ॥ नाभीस चन्द्रमणुले
 तुयुवहि सा उवहि गुहंकारं नादयाक्यं मंत्रमाता उभेजुया
 वया सुतुं पिसं वया भवगु नाभी प्रवेशजुया वज्रया भागं
 यमे प्रवेशजुया अवधूती नाडीया मार्गं पसं वया भगवती
 या सुतुं पिसं वया भवगु सुतुं उहं वना नादे लीनजुया हा
 नं अंनं उभेजुया सा पापं सकभनं चाचाउला चंयु चित्तना
 याये॥ भगवान् भगवतीया मूत्रमंत्रं जापयाये धुतिजापविधि
 ॥ ॥ धनंति ह्यमायाभ्यं ध्यानवना आकर्षणा पादार्थ उ

ष्यन्मास पंचोपचार पूजा लास्या स्तुतिः तर्पणः ॥

॥ भुविजापयोगः ॥ ततो वलिमारभेत् ॥ ॥ धनंलि

वलि आरंभयाये ॥ ॥ पुरतो यैकारवायु मण्डलं नीलं त

उपरि रंकारेण अग्नि मण्डलं रक्तं तत्र शुक्ल आकारपरिण

तं शुक्लपद्मभाजनं मुद्रात्रितय चूलिकायां व्यवस्थितं पद्मभा

जनं तत्र भक्तादि कं ॥ ॐ ॐ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं

त पंचामृत पंचप्रदीप रूपेण निष्पाद्य वायुप्रेरितं ज्वलितमि

तापन वीजाक्षरादिकं अभिनवभाजवर्गा इव रूपं दृष्ट्वा तउप

रिमारदवर्गा वितस्तिमात्रांतरिता हं भवाधो मुखामृतमयशुक्ल

खटांगविलीने सति तद्भवपारदवर्गा शितीभूतं च दृष्ट्वा तउ

परि आलिकालि परिणतं ॐ ॐ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं

परिरभ्य चक्रदेवता स्फुरिता जगदर्थं कृत्वा सकलामृतस

मानीय समापनि पूर्वकं इवीभूय यथा यथा तेषु वीजेषु प्र

तिष्ठाभावनीया ॥ ततः ॐ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं

त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं

तस्य परिवारं आकयेत् ॥ ॥ ध्यानः ॥ ध्याने नीलवर्गा यै

कारनं वायुमण्डलं नीलवर्गा ध्यायेत् रंकारनं अग्निमण्डलं

स्याउवर्गा भुक्तेतुयूय आकारपरिणतजुया तुयूय पद्मभा

जने स्वंगकवर्षोया भुक्तेती ये वने चंय पद्मभाजनं भुक्ते

श्री हंकार बीजस्वया ॥ ॥ अन्ते न्यानुगताः सर्वधर्माः ॥ ॐ
 परस्परानुगताः सर्वधर्माः ॥ ॐ अत्यन्तानुगता प्रतिष्ठाः सर्वध
 र्माः ॥ ॥ ॐ ॥ अदिमंत्रवने ॥ ॥ चन्द्रसूर्ये लुरुं हंकार परि
 णामेन वज्रांजलि उच्चकृत करद्वयतदमृत भांडानिवस्थाप्य
 धात्वा वा वक्ष्यधिकारार्थमिदं पठेत् ॥ ॥ चन्द्रसूर्ये आरु
 टयानाच्चरु धवरुटाहानियास हंकारबीज परिणामजुया
 वज्रांजलि उच्चजुया लाहानियां अमृतभांड धृतया अ
 थवामनं चिन्तनायाना वलि अधिकारयायन ध्वजे चयाण
 मंत्रवने ॥ ॥ देव्यः प्रमारां समयप्रमारां न उक्तवाच
 श्वपरं प्रमारां ॥ एतेन सत्येन भवेत्युरेता देव्यो ममानुग्रह
 हेतुभूताः ॥ भगवतः हंभव शुक्लाजिह्वा विभाव्य ॥ ॐ वज्रां
 जलि जः हं वै होः वज्रडाकिनी समयस्त्वं दृश्योः ॥ ॥
 भगवतस्तत्प्रज्ञायाः डाकिन्यादीनां काकास्पादीनां च टौक
 येत् ॥ ॥ भगवान् प्रज्ञादेवी डाकिनी आदिं त्रिचक्रा
 देवता काकाश्पा आदियातनं जाकिस्वां मंत्रपात्रेऽथ ना
 खवलाहृतं गंधाना जवलाहृतं वलीहायके ॥ ॥
 मंत्र ॐ कर २ कुरु २ वध २ त्रास २ भो भय २ हौं २ हुं २ फैं
 फू २ हन २ दह २ पच २ भक्ष २ वस रुधिराज माला वल
 विने ग २ सप्तपातालगत भुजंग सूर्यं वा तर्जय २ आ

25

32

12

12



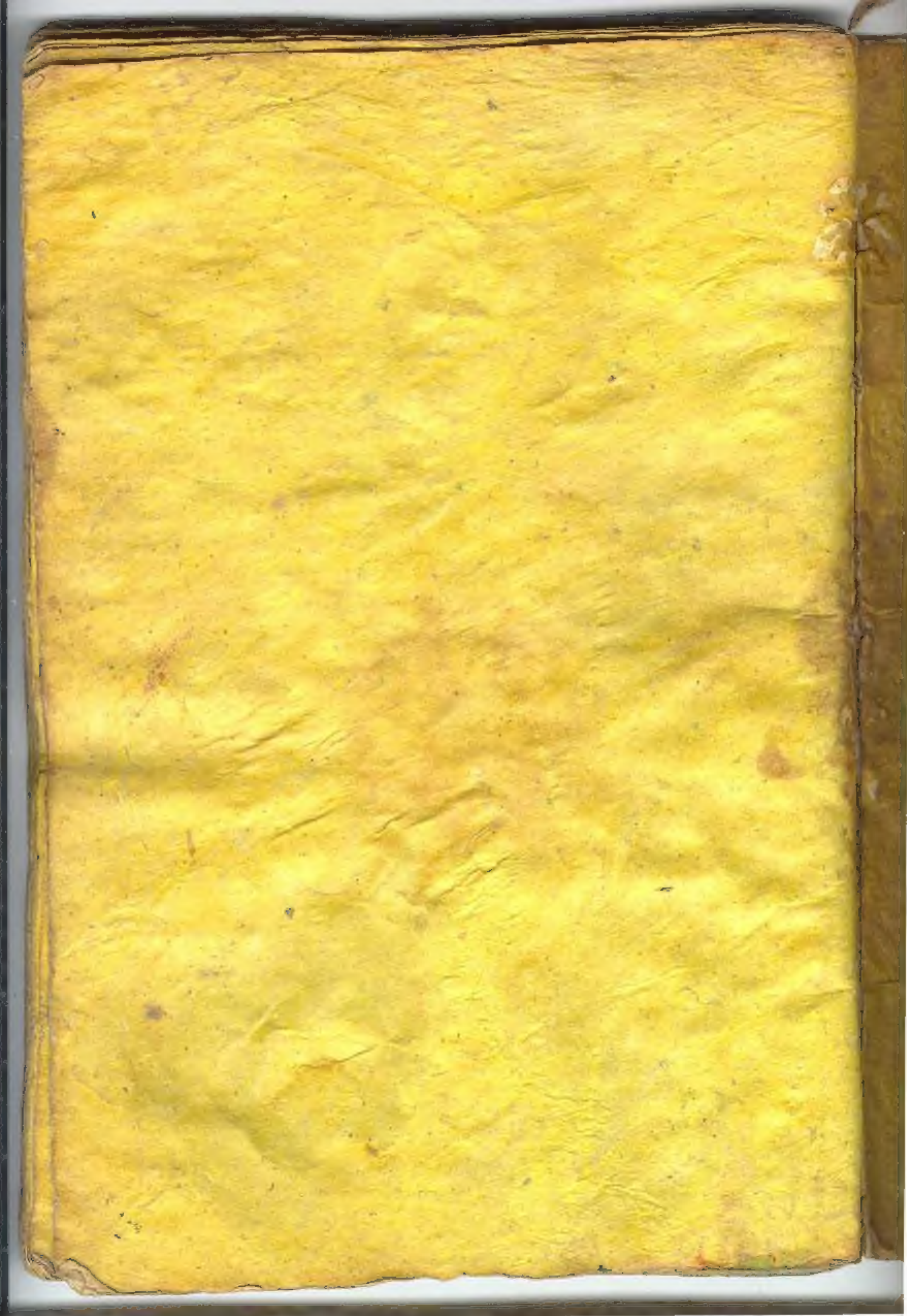












জায়া দ্বারা
৬৮

ASIA MUSEUM

